SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-3, March- 2024
www.shikshasamvad.com

"जनपद पीलीभीत के ग्रामीण परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अनुपस्थिति का अध्ययन"

प्रवेश कुमार
प्रवक्ता,
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान ,बीसलपुर ,पीलीभीत
Email – praveshkumar@gmail.com.

महेन्द्र कुमार सिंह
प्राचार्य, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान ,बीसलपुर ,पीलीभीत
Email – praveshkumar@gmail.com.

शोध सारांश:

जनपद पीलीभीत में संचालित ग्रामीण परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अनुपस्थिति के क्या कारण है ? तथा किन–किन कारकों का प्रभाव विद्यार्थियों की अनुपस्थिति पर पड़ता है। यह जानने हेतु प्रस्तुत शोध कार्य को जनपद पीलीभीत के पाँच ब्लाकों का चयन गुच्छ प्रतिदर्श चयन विधि से करते हुए, प्रत्येक विकासखण्ड से यादृच्छिक न्यादर्शन की रैंडम लॉटरी विधि द्वारा दो–दो प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा एक से पाँच तक अध्ययनरत् विद्यार्थियों का चयन रैंडम लॉटरी द्वारा करते हुए कुल 100 विद्यार्थियों पर किया गया है। प्रयुक्त साक्षात्कार अनुसूची में विद्यालयी अवस्थापनाओं, अध्यापक– अध्यापिकाओं की शिक्षण गतिविधियाँ, विद्यार्थियों के परिवेशीय वातावरण एवम् अभिभावकों की शैक्षिक एवं आर्थिक स्थितियों के प्रभाव का विद्यार्थियों की अनुपस्थिति के संबंध में अध्ययन किया गया। प्राप्त आँकड़ो का परिमाणात्मक एवं गुणात्मक विश्लेषणों के आधार पर औसत अनुपस्थिति 41.38 प्रतिशत पायी गई तथा अनुपस्थिति को प्रभावित करने वाले कारकों में सर्वाधिक प्रतिकूल प्रभाव अभिभावकों की शैक्षिक एवं आर्थिक स्थितियों का पाया गया, जिसके अंतर्गत अधिकांश विद्यार्थियों की माता–पिता की आर्थिक सहायता हेतु मजदूरी, कृषि कार्य में संलग्नता पायी गयी तथा अभिभावकों में शिक्षा के महत्त्व के प्रति जागरूकता का अभाव पाया गया, कुछ प्रभाव विद्यार्थियों के परिवेशीय वातावरण से संबंधित पाए गए जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों का अपने घरेलू कार्यों में सहयोग करना, छोटे भाई बहनों की देखभाल करना, रिश्तेदारी में चले जाना आदि मुख्य कारण पाएँ गए तथा कुछ प्रभाव विद्यालयों में शिक्षकों की कमी होने से पाए गए। विद्यालय संसाधनों एवम् शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण गतिविधियाँ बेहतर पायी गयी, जिसका प्रभाव विद्यार्थियों की अनुपस्थिति में संतोषजनक पाया गया।

कूट शब्दावली: ग्रामीण ,परिषदीय प्राथमिक विद्यालय, अध्ययनरत विद्यार्थी, अनुपस्थिति

प्रस्तावनाः

जीवन की आधारशिला वास्तव में प्राथमिक शिक्षा से ही रखी जाती है। इस अवधि में बच्चों में मस्तिष्क की संवेदनशीलता बढ़ती है और उनका शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा किसी राष्ट्र की सभ्यता, राजनीतिक प्रभुसंपन्नता, धर्म एवं संस्कृति की रीढ़ है, जिसका प्रजातांत्रिक परिपेक्ष्य में मूल्य और भी अधिक बढ़ जाता है।

मनुष्य एक बौद्धिक प्राणी तो है ही साथ ही साथ वह प्रकृति की एक सर्वोत्तम कृति भी है। यह सर्वोत्तम कृति असहाय स्थिति में अपने जीवन का अस्तित्व एवं निरंतरता बनाए रखने के लिए कुछ जन्मजात प्रवृत्तियाँ को लेकर उत्पन्न होती है। यह शिक्षा ही है जो इस बौद्धिक प्राणी की बुद्धि को सार्थक बना कर उसकी जन्मजात प्रवृतियों का शोधन तथा मार्गन्तिकरण करते हुए उसे क्रमशः अपना सर्वांगीण विकास करने का अवसर प्रदान करती है। निश्चित ही स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत सरकार द्वारा किए गए प्रयासो के फल स्वरुप प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में विशेष रूप से शिक्षण संस्थाओं, शिक्षकों की संख्या, विद्यालयों में बच्चों के नामांकन में प्रभावी रूप से बढ़ोतरी हुई है किंतु गुणात्मक रूप से अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हुए हैं। प्राथमिक शिक्षा का महत्त्व इस बात से भी है कि अधिकतर नागरिकों के लिए संपूर्ण शिक्षा इसी स्तर पर ही समाप्त हो जाती है। अतः इस नींव को सशक्त बनाना नितांत आवश्यक है।

अतः शोधार्थी द्वारा किए जाने वाले शोध से प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उपस्थिति में अनियमितताओं को कम किया जा सकेगा तथा विद्यालयों का अधिगम वातावरण रुचिकर बनाया जा सकेगा जिससे नौनिहालों की क्षमताओं और योग्यताओं में वृद्धि कर उनका सर्वांगीण विकास किया जा सकेगा। प्राथमिक स्तर की शिक्षा समस्त शैक्षिक संरचना की नींव है और यदि नींव ही कमजोर होगी तो उस पर खड़ा शिक्षा रूपी भवन अधिक दिनों तक खड़ा नहीं रह सकता। इस प्रकार शोधार्थी द्वारा प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की अनुपस्थिति का अध्ययन करना शैक्षिक क्रियाओं को प्रभावकारी ढंग से श्रेष्ठतर बनाने की संभावना प्रदान कर सकेगा।

कूट शब्दावली का परिभाषीकरण

ग्रामीण

ग्रामीण शब्द से तात्पर्य गांव में रहने वाली उस जनसंख्या से है जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि, मजदूरी आदि कार्य करते हुए गांवों में निवास करना हैं।

परिषदीय प्राथमिक विद्यालय

परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों से तात्पर्य उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा स्थापित परिषदीय बेसिक शिक्षा अधिनियम 1972 के अंतर्गत संचालित सरकारी विद्यालयों से है, जिनमें कक्षा एक से पांच तक के विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं।

SHIKSHA SAMVAD PASSION TOWARDS EXCELLENCE

अध्ययनरत विद्यार्थी

अध्ययनरत विद्यार्थियों से तात्पर्य उन बच्चों से है जो सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में नामांकित होकर के शिक्षा ग्रहण करते है।

अनुपस्थिति

अनुपस्थिति से तात्पर्य उन बच्चों से है जो विद्यालयों में नामांकित होकर नियमित रूप से किन्हीं भी कारणों से विद्यालय नहीं आ पाते हैं अर्थात विद्यालय में नियमित रूप से उपस्थित होकर शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते हैं। जिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर पड़ता है।

शोध उद्देश्य

1. जनपद पीलीभीत के ग्रामीण परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अनुपस्थिति का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों की अनुपस्थिति पर विद्यालय अवस्थापनाओं के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों की अनुपस्थिति पर शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. विद्यार्थियों की अनुपस्थिति पर अभिभावकों की शैक्षिक एवं आर्थिक स्थितियों के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. विद्यार्थियों की अनुपस्थिति पर उनके परिवेशीय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएं

1. विद्यार्थियों की अनुपस्थिति पर विद्यालय अवस्थापनाओं के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों की अनुपस्थिति पर कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों की अनुपस्थिति पर उनके अभिभावकों की शैक्षिक एवं आर्थिक स्थितियों के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. विद्यार्थियों की अनुपस्थिति पर बच्चों के परिवेशीय है वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. विद्यार्थियों की अनुपस्थिति से संबंधित कारणों को ज्ञात करना।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

शोध का सीमांकन

शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन क्षेत्र को निम्न सीमाओं तक सीमित रखा है अर्थात शोध अध्ययन कार्य की निम्नलिखित सीमाएं रही हैं :–

1. यह शोध कार्य जनपद पीलीभीत के ग्रामीण परिषदीय विद्यालयों तक ही सीमित रखा गया है।
2. यह शोध कार्य जनपद पीलीभीत के परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा (1–5) तक के विद्यार्थियों तक ही सीमित रखा गया है।

3. यह शोध कार्य पीलीभीत जनपद के पांच विकास क्षेत्रों के दो–दो प्राथमिक विद्यालयों को शामिल करते हुए 10 प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कुल 100 विद्यार्थियों पर किया गया है।

शोध विधि

प्रयुक्त शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा शोध विधि के लिए वर्णात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श चयन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श के चुनाव हेतु जनपद पीलीभीत के कुल 8 विकास खंडों में से 5 विकास खंडों का चयन गुच्छ न्यादर्श विधि से करने के उपरान्त प्रत्येक विकास खंड से यादृच्छिक न्यादर्श की लाटरी विधि से दो–दो प्राथमिक विद्यालयों का चयन करते हुए कुल 10 प्राथमिक विद्यालयों को न्यादर्श के लिए चुना है। प्रत्येक चुने गए प्राथमिक विद्यालयों से कक्षा 1 से 5 तक के अध्ययनरत 10–10 विद्यार्थियों का चयन भी यादृच्छिक न्यादर्श की लॉटरी विधि से करते हुए कुल 100 उत्तरदाताओं से आँकड़े एकत्रित किए गए हैं।

शोध उपकरण

शोध के उद्देश्य की दृष्टि से विद्यार्थियों की अनुपस्थिति के कारणों के अध्ययन हेतु स्वः निर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। शोध उपकरण को मानकीकृत करने के लिए मानकीकृत प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है। तदोपरांत मानकीकृत साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग शोध हेतु किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

विकास खण्ड का नाम	विद्यालय का नाम	विद्यार्थियों का नामांकन	विद्यार्थियों की उपस्थिति	विद्यार्थियों की अनुपस्थिति
अमरिया	प्राथमिक विद्यालय उदयपुर	163	70	93
अमरिया	कंपोजिट प्राथमिक विद्यालय अभय राजपुर	41	33	08
ललौरीखेड़ा	प्राथमिक विद्यालय कल्यानपुर खास	120	73	47
ललौरीखेड़ा	प्राथमिक विद्यालय पुन्तापुर	58	36	22

बीसलपुर	प्राथमिक विद्यालय गोबल पति पूरा	278	149	129
बीसलपुर	प्राथमिक विद्यालय गोबल पति पुरा	173	125	48
बरखेड़ा	प्राथमिक विद्यालय टिकरी माफी	62	38	24
बरखेड़ा	कंपोजिट प्राथमिक विद्यालय जोगीठेर	136	85	51
पुरनपुर	प्राथमिक विद्यालय सिसइया	117	57	60
पुरनपुर	प्राथमिक विद्यालय गैरतपुर	128	82	46
योग	—	1276	748	528
औसत प्रतिशत में	—	—	58.62%	41.38%

साक्षात्कार अनुसूची से प्राप्त अनुक्रियाओं का परिमाणात्मक एवं गुणात्मक विश्लेषण करते हुए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या की गई :—

प्राप्त आंकड़ों के आधार पर औसत अनुपस्थिति 41.38 प्रतिशत पायी गई जो कि असन्तोषजनक है। शोधार्थी ने अनुपस्थिति के कारणों को जानने के लिए प्राप्त आंकड़ों का गुणात्मक रूप से विश्लेषण निम्नलिखित परिकल्पनाओं के आधार पर किया है :—

1. विद्यार्थियों की अनुपस्थिति पर विद्यालय अवस्थापनाओं के प्रभाव के अध्ययन हेतु प्रयुक्त साक्षात्कार अनुसूची से प्राप्त अनुक्रियाओं का विश्लेषण करने पर संतोषजनक प्रभाव पाया गया अर्थात विद्यालय अवस्थापना बेहतर पायी गयी जो कि विद्यार्थियों की अनुपस्थिति को प्रभावित नहीं कर रही है।
2. विद्यार्थियों की अनुपस्थिति पर कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं के प्रभाव के अध्ययन हेतु प्रयुक्त साक्षात्कार अनुसूची से प्राप्त अनुक्रियाओं का विश्लेषण करने पर संतोषजनक प्रभाव पाया गया अर्थात अधिकांश शिक्षकों द्वारा प्रभावी शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएँ संचालित की जा रही है जो कि अनुपस्थिति को प्रभावित नहीं कर रही है।
3. विद्यार्थियों की अनुपस्थिति पर अभिभावकों की शैक्षिक एवं आर्थिक स्थितियों के प्रभाव के अध्ययन हेतु प्रयुक्त साक्षात्कार अनुसूची से प्राप्त अनुक्रियाओं का विश्लेषण करने पर पाया गया कि ज्यादातर अभिभावक अपने बच्चों को कृषि कार्य एवं मजदूरी कार्य में लगाने के कारण नियमित रूप से बच्चों को विद्यालय नहीं भेज रहे हैं। जिस कारण अभिभावकों की शैक्षिक एवं आर्थिक स्थितियां बच्चो की अनुपस्थिति पर नकारात्मक प्रभाव डाल रही है अर्थात बच्चों की अनुपस्थिति को बढ़ा रही है।
4. विद्यार्थियों की अनुपस्थिति पर परिवेशीय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करने पर पाया गया की अधिकांश बच्चे अपने घरेलू कार्यो में सहयोग करने के कारण, छोटे भाई—बहनों की देखभाल करने के कारण, रिश्तेदारी मे चले जाने के कारण तथा बीमार होने के कारण विद्यालय नियमित रूप से

नहीं आ रहे हैं अर्थात परिवेशीय वातावरण के ये सभी कारक विद्यार्थियों की अनुपस्थिति को बढ़ा रहे हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष एवं सुझाव निम्नलिखित है :–

1. विद्यार्थियों की अनुपस्थित को कम करने में विद्यालयी अवस्थापनाओं की भूमिका संतोषजनक रूप से प्रभाव डाल रही है। अर्थात विद्यालय की अवस्थापनाएँ बेहतर होने से विद्यार्थियों की अनुपस्थिति को कम किया जा सकता है।
2. विद्यार्थियों की अनुपस्थिति पर शिक्षकों द्वारा प्रयोग की जा रही कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएँ संतोषजनक रूप से प्रभाव डाल रही हैं अर्थात शिक्षकों द्वारा रोचक एवं प्रभावी शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएँ रुचिकर बनाकर अनुपस्थिति को कम किया जा सकता है।
3. विद्यार्थियों की अनुपस्थिति को अभिभावकों की शैक्षिक एवं आर्थिक स्थितियां असंतोषजनक रूप से प्रभावित कर रही है अर्थात अभिभावकों की आर्थिक एवं शैक्षिक स्थितियां बच्चों की अनुपस्थिति को बढ़ाने का सबसे मुख्य कारण है। ज़्यादातर बच्चे कृषि कार्य एवं मजदूरी कार्यों में सहयोग करने के कारण विद्यालय नियमित रूप से नहीं आ पाते हैं। इसको दूर करने के लिए प्रौढ़ साक्षर कार्यक्रमों के माध्यम से अभिभावकों को साक्षर बनाते हुए शिक्षा के महत्त्व के प्रति जागरूक किया जा सकता है। तथा ग्रामीण लघु उद्योगों को प्रोत्साहित करते हुए अभिभावकों को लघु उद्योगों के माध्यम से आर्थिक रोजगार गांव में ही सृजित किए जा सकते हैं जिससे बच्चों की अनुपस्थिति को कम किया जा सकता है।
4. विद्यार्थियों की अनुपस्थिति को परिवेशीय वातावरण नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा है अर्थात परिवेशीय वातावरण की परिस्थितियां बच्चों को नियमित विद्यालय आने में बाधा उत्पन्न कर रही है। इसको दूर करने के लिए सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं जैसे मुफ्त राशन वितरण योजना, मनरेगा योजना, डीबीटी योजना एवं निःशुल्क चिकित्सकीय योजनाओं आदि से लाभान्वित होने वाले ग्रामीणों को उनके बच्चों की विद्यालय उपस्थिति को आधार बनाते हुए प्राथमिकता दी जाए जिससे परिवेशीय वातावरण में बच्चों की अनुपस्थिति को कम करने में जागरूकता लायी जा सकती है।

आभार

प्रस्तुत शोध अध्ययन को राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, लखनऊ, उत्तर प्रदेश की वित्तीय सहयता के माध्यम से श्री दरवेश कुमार वरिष्ठ प्रवक्ता, जिला शिक्षा एंव प्रशिक्षण संस्थान, बीसलपुर के मार्गदर्शन में सम्पन्न किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गिल केपेसं 2023– 'स्कूल से अनुपस्थिति और शैक्षिक उपलब्धि : क्या अनुपस्थिति का समय मायने रखता है ?
   जर्नल आफ लर्निंग एंड इन्स्ट्रक्शन 86(2023) 101769
2. नेला खालिद D/O खालिद महमूद "इफेक्ट्स ऑफ अब्सेंट इंजिम ऑन स्टूडेंट्स परफॉरमेंस"
   इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एंड रिसर्च पब्लिकेशन्स, वॉल्यूम 7,इश्यू 9 सितंबर 2017
3. एम. गॉट फ्राइड 2019 "कक्षा के संदर्भ में लगातार अनुपस्थितिः उपलब्धि पर प्रभाव– शहरी शिक्षा, 54(1) 2019
4. एम. गॉटफ्राइड , जे. किर्कसे "जब छात्र स्कूल से चूक जाते हैं :छात्रों के परीक्षण प्रदर्शन पर अनुपस्थिति के समय की भूमिका– शैक्षिक शोधकर्ता, 46(3) (2017)
5. मनोज श्रीवास्तव – "क्यों टूटता है विद्याध्ययन का क्रम " लेख
6. "भारतीय विद्यालयों में व्यापक नामांकन के अलावा कम उपस्थिति ,उच्च ड्रापआउट " –इंडिया स्पेंड.कॉम
7. "स्कूलों से बच्चों की अनुपस्थिति के कारण का अध्ययन" –द इंडियन वायर.कॉम
8. लाल एवं शर्मा – "भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएँ"
9. जी .एस. वर्मा – "आधुनिक भारतीय शिक्षा एवं समस्या है"
10. बी एक स्ट्रैड – बच्चो को स्कूल में बनाए रखने के लिए क्या करना होगा : एक शोध समीक्षा शैक्षिक समीक्षा , 67 (4) (2015) पी पी. 459–482

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-03, March- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-March-2024/20

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

प्रवेश कुमार एवं महेन्द्र कुमार सिंह

For publication of research paper title

"जनपद पीलीभीत के ग्रामीण परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अनुपस्थिति का अध्ययन"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-03, Month March, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com